सामाजिक संस्था संपूर्णा

(गैर सरकारी संगठन)

संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर

आलेख

#boislockerroom

बॉयज लॉकर रूम

डॉक्टर शोभा विजेंद्र

संपूर्णा संस्थापिका

दिल्ली और देश में लॉक डाउन के साथ-साथ बॉयज लॉकर रूम भी आजकल चर्चा में है। इंस्टाग्राम पर छोटी-छोटी लड़कियों के विषय में अभद्र बातें , उनके शारीरिक अंगों के बारे में अनर्गल टिप्पणियां, और सामूहिक बलात्कार की बातें करके दक्षिणी दिल्ली के संभ्रांत परिवारों के लड़कों ने सभी सीमाओं को लांघ दिया है।

कितनी शर्म की बात है , कि आज हम सब ने कोरोना वायरस के संक्रमण के कारण मुंह पर पट्टियां बांधने के साथ-साथ दुर्योधन के माता पिता धृतराष्ट्र और गांधारी की तरह अपनी आंखों पर भी पट्टी बांध ली है। बताते हुए बड़ा खेद हो रहा कि

बहुत ही शर्मनाक खेल सोशल मीडिया के माध्यम से चल रहा है। क्या ये फेसबुक , व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, ट्विटर और सोशल मीडिया के अन्य साधन मासूम लड़कियों के चरित्र हरने के लिए ही हैं? यह पतन समाज को कहां तक ले जाएगा। अपने घर में बैठकर स्कूल और कॉलेजों में पढ़ने वाले इन लड़कों ने इंस्टाग्राम पर सामूहिक बलात्कार की रचना ही कर डाली और तभी यह सोशल मीडिया पर वायरल हो गया।निजी कहकर आप किसी भी हद तक नहीं जा सकते। वह मामला जोसोशल मीडिया पर 30 से भी अधिक लोगों के साथ शेयर करें तो क्या यह आपका मामला निजी मामला रह सकता है।इस लॉक डाउन के समय में जब हम सब लोग अपना अवलोकन कर रहे हैं ऐसे में बॉयज लॉकर रूम ने हम सबको पुन: हिला दिया है। लड़कियों के रेप की घटनाएं क्या मजाक है ? और अगर संपन्न परिवारों में पलने और बड़े होने वाले बच्चे इस भाव को अपने निजी बातचीत में बिना किसी संकोच के शौक में , मजे में , प्रयोग करते हैं तो यह परिवार के लिए , अध्यापकों के लिए , मित्रों के लिए और आसपास में उस व्यक्ति को जानने वाले सभी के लिए क्या यह डूब मरने का विषय नहीं है ? अभी हाल ही के दिनों में ही किसी ने मुझे बताया था कि कुछ विद्यार्थी आजकल रेप शब्द को भी अपनी रोजमर्रा की बातचीत का हिस्सा बनाए हुए हैं और तभी से मन में यह बात बार - बार कौंध रही थी कि आज नहीं तो कल इसका वींभत्स रूप हम सबके सामने होगा।

हमने पहले गाली गलौज को अपनी बातचीत का हिस्सा बनाकर

और उसे सामाजिक शिष्टता में शामिल कर के अर्थ को अनर्थ बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी और अब इस घिनौने शब्द रेप को रोजमर्रा की भाषा में इस्तेमाल कर हम सारी हदों को पार कर चुके हैं। दर्दनाक है ये , विषाक्त है ये, ये माफ करने योग्य नहीं है, ये अपराध इंस्टाग्राम पर बातचीत करने वाले सभी 32 युवाओं को ऐसी सजा मिलनी चाहिए जिससे कि बाकी सभी युवा जो सोशल मीडिया के विभिन्न साधनों पर अपनी गंदी सोच को सार्वजनिक करते हैं और जरा भी नहीं डरते। उनको यह भान हो जाना चाहिए कि वे अपनी गंदी सोच को अच्छी सोच में बदले बिना समाज का हिस्सा नहीं बन सकते।

मेरा सभी भाइयों से अनुरोध है कि अपनी भाषा पर लगाम लगाना केवल मुहावरा नहीं है अपितु यह समाज को सुसंस्कृत करने का सबसे बड़ा सार्थक हथियार है। आप सभी निरंतर समाज के लिए काम करने वाले व्यक्ति हैं।

मेरा आपसे एक और अनुरोध है कि जहां कहीं भी आप भाषा का अतिक्रमण होते हुए देखें तुरंत अपनी आवाज को बुलंद करें।